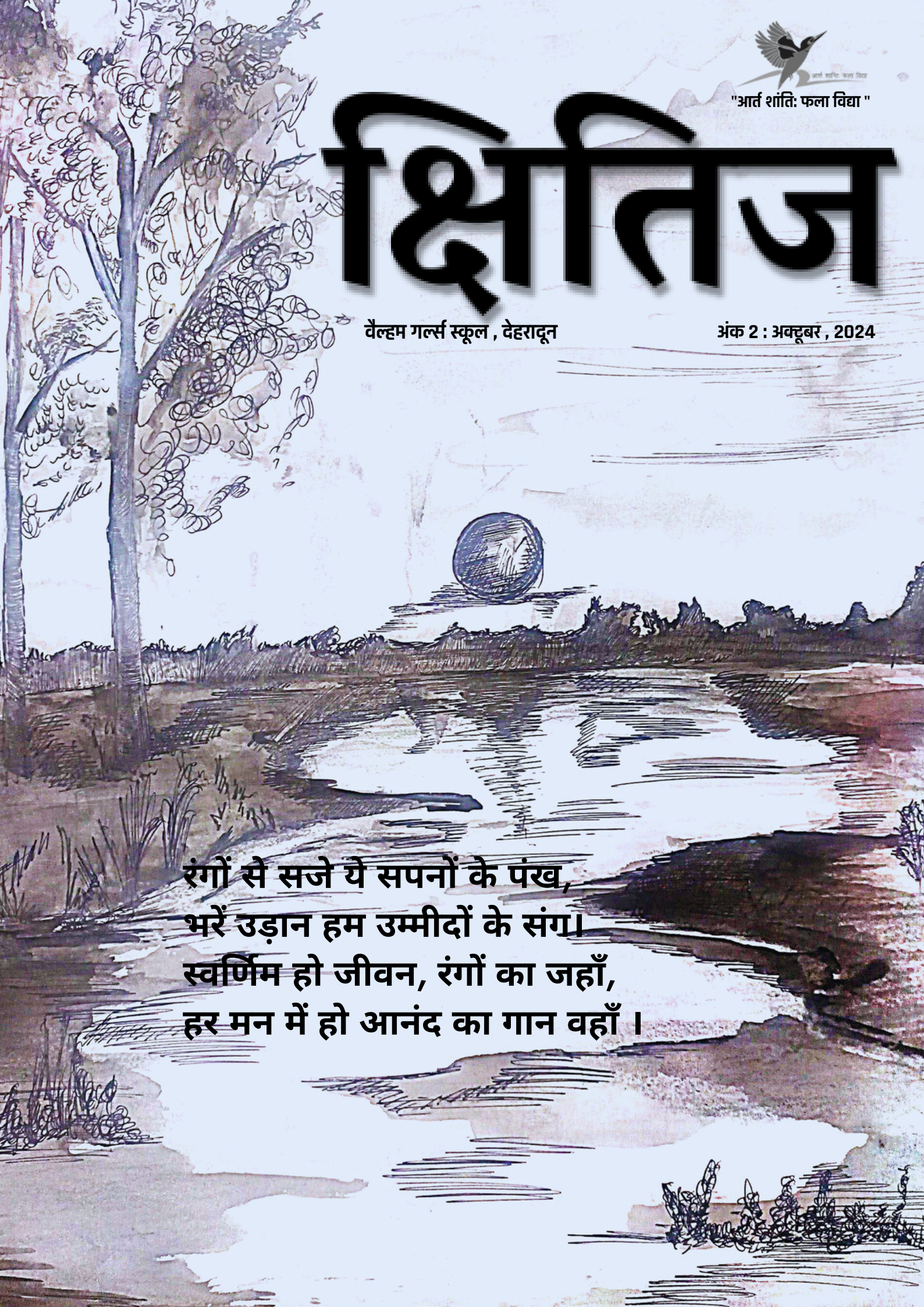

"आर्त शांतिः फला विद्या "

क्षितिज

वैल्हम गर्ल्स स्कूल , देहरादून

अंक 2 : अक्टूबर , 2024

रंगों से सजे ये सपनों के पंख,
भरें उड़ान हम उम्मीदों के संग।
स्वर्णिम हो जीवन, रंगों का जहाँ,
हर मन में हो आनंद का गान वहाँ ।

सम्पादिका की कलम से...

प्रिय पाठको,

प्रकृति का सौन्दर्य अवर्णनीय है और इस सौन्दर्य में चार चाँद लगाते है- रंग। सूर्य की रक्तिम लालिमा, खेतों की हरियाली, नभ का नीलापन, वर्षा के पश्चात विस्तृत इन्द्रधनुष की अद्भुत छटा और बर्फ़ की सफ़ेदी, सर्वत्र रंगों का सौन्दर्य आत्मा को आनंदित और प्रफुल्लित कर जाता है। इस आनंद का रहस्य है- रंगों की अनुभूति। मानव जीवन रंगों के बिना अकल्पनीय है। मुख्यत: सात रंगों की इस सृष्टि में प्रत्येक रंग हमारे जीवन पर प्रभाव छोड़ता है।

क्या आपने कभी कल्पना की है कि यदि प्रकृति में रंग नहीं होते तो रंगों के अभाव में सम्पूर्ण प्रकृति, जीव-जंतु, मानव, पेड़-पौधे, फल-फूल एक समान ही नजर आते। विज्ञान तो कहता है कि इस संसार की किसी भी वस्तु में रंग नहीं हैं साथ ही जल, वायु, अंतरिक्ष और सम्पूर्ण जगत रंगविहीन है। यह रंग तो केवल प्रकाश में है और वह प्रकाश है सूर्य का। सूर्य की किरणों में सात रंग हैं जिन्हें वेदों में सात रश्मियाँ कहा गया है-

''सप्तरश्मिरधमत् तमांसि।'' (ऋग्वेद)

सूर्य के प्रकाश से संरचित इंद्रधनुष के प्रत्येक रंग का स्वयं में एक अर्थ होता है। लाल रंग ऊर्जा का, नारंगी रंग रचनात्मकता का, पीला रंग आशावाद का, हरा रंग विकास और नवीनीकरण का, नीला रंग शांति और संचार का और बैंगनी रंग आध्यात्मिकता और ज्ञान का प्रतिनिधित्व करता है।

क्षितिज के इस अंक में हमने उन भावनाओं को प्रदर्शित करने का प्रयास किया है जिनके प्रयोग से न केवल जीवन में सकरात्मकता आती है अपितु जीवन रंगीन और खुशनुमा भी हो जाता है। जब मैं अपने विद्यालय के मनोरम दृश्य को देखती हूँ तो यहाँ की प्रकृति में समाहित हरा रंग मुझे मानसिक शांति प्रदान करते हुए मेरे मन में सद्भाव की भावना प्रदीप्त करता है। उपवन में खिला हुआ गुलाबी कमल का फूल मुझमें सहानुभूति और प्रेम की भावना जगाता है। खिले हुए अन्य रंग-बिरंगे पुष्प मुझमें आशावाद की नवीन भावना जागृत करते हैं। इसलिए मेरा मानना है कि ये सभी रंग केवल एक दृश्य अनुभव नहीं हैं, अपितु आंतरिक मन का भी प्रतिबिंब हैं।

अपने भीतर झाँक कर तो देखिये कितने सारे रंग दबे बैठे हैं,इनको उभरने दीजिए और फिर देखिये यह संसार कितना अद्भुत प्रतीत होगा। आशा करती हूँ कि क्षितिज का यह रंग-बिरंगा अंक आप सभी के जीवन में एक नवीन उत्साह का संचार करेगा और इस वर्ष भी आप का इसे अनन्य प्रेम प्राप्त होगा।

मुख्य संपादिका
दीपिका जोशी

इस अंक में आगे

- सफलता का रहस्य
- लिखा हमने भी एक लेख.....
- इंद्रधनुष के रंगो का जादू
- क्या त्वचा के रंग के आधार पर मूल्यांकन करना उचित है?
- छोटी कहानियों के बड़े सबक
- चाँद की प्रेरणादायक ज्योति
- रंग - बिरंगे शहर
- मुझसे बढ़कर कौन
- रंग और प्रसिद्ध ब्रांडस
- मस्त मुहावरे
- बूझो तो जाने :वैल्हम को पहचाने
- हर चित्र कुछ कहता है .....
- शैक्षिक समाजवाद के क्षेत्र में वैल्हम गर्ल्स स्कूल की एक अनूठी क्रांतिकारी पहल
- गौरव के क्षण
- साक्षात्कार: हिन्दी भाषा के अनन्य साधक: आचार्य पृथ्वी नाथ पांडे
- उभरती कवियत्रियाँ
- वैल्हम की पहेली
- वैल्हम की सामाजिक पहल
- परदे की पीछे

सकारात्मकता

सफलता का रहस्य

एक बार एक व्यक्ति ने सुकरात से पूछा कि "सफलता का रहस्य क्या है?" सुकरात ने उस व्यक्ति से कहा कि वह कल प्रातः नदी के पास मिले, वहीं पर उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिलेगा। जब दूसरे दिन प्रातः वह व्यक्ति नदी के पास मिला तो सुकरात ने उसको नदी में उतरकर, नदी की गहराई मापने के लिए कहा। वह व्यक्ति नदी में उतरकर आगे की तरफ जाने लगा। जैसे ही पानी उस व्यक्ति की नाक तक पहुँचा, पीछे से सुकरात ने आकर अचानक से उसका मुँह पानी में डुबो दिया। वह व्यक्ति बाहर निकलने के लिए छटपटाने लगा लेकिन सुकरात ने उसे काफी देर तक पानी में डुबोए रखा। कुछ समय बाद सुकरात ने उसे छोड़ दिया और उस व्यक्ति ने जल्दी से अपना मुँह पानी से बाहर निकाला और जल्दी-जल्दी साँस ली। सुकरात ने उस व्यक्ति से पूछा –"जब तुम पानी में थे तब तुम सबसे अधिक क्या चाहते थे?" व्यक्ति ने कहा –"मैं जल्दी से बाहर निकलकर साँस लेना चाहता था।" सुकरात ने कहा –"यही तुम्हारे प्रश्न का उत्तर है।जब तुम सफलता को उतनी ही तीव्र इच्छा से चाहोगे जितनी तीव्र इच्छा से तुम साँस लेना चाहते थे, तो तुम्हें सफलता निश्चित रूप से मिल जाएगी।"

स्पष्ट है कि जीवन में सफल होने के लिए सर्वप्रथम लक्ष्य का निर्धारण करना आवश्यक है साथ ही सकारात्मक मानसिकता रखना और विश्वास रखना भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। सकारात्मक सोच ही अपेक्षाओं को ऊँचा रखती है और स्मरण कराती है कि क्या संभव है? लक्ष्य को प्राप्त करने में अनेकानेक चुनौतियाँ आ सकती हैं, लेकिन स्मरण रखना चाहिये कि वे अस्थाई हैं। किसी भी लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए प्रतिबद्धता अर्थात स्वयं को समर्पित करना होता है क्योंकि कड़ी मेहनत का कोई विकल्प नहीं है, बस मजबूत इरादों के साथ आगे बढ़ते रहना पड़ता है। "हार मानना कमजोरी नहीं, बल्कि यह तो सफलता का पहला कदम है। **किसी ने सत्य कहा है-**

सागर की अपनी क्षमता है, पर माँझी भी कब थकता है।
जब तक साँसों में स्पन्दन है उसका हाथ नहीं रुकता है।
इसके ही बल पर कर डाले सातों सागर पार,
तूफानों की ओर घुमा दो नाविक निज पतवार।

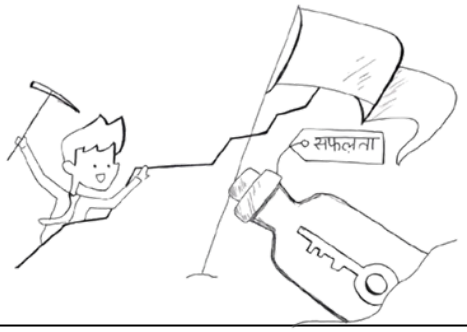

प्रदीपिका गुप्ता
कक्षा - बारह

लिखा हमने भी एक लेख.....

बात तब शुरू हुई जब क्षितिज की संपादिका ने माँगा हमसे एक लेख। ऐनक लगा पत्र- पत्रिकाओं में ढूँढने लगे हम कोई अनछुआ आलेख। अपनी खुद की किताबों को बाहर छोड़ हमने खोजे पुस्तकालय में अनेक लेख लेकिन हर लेख या तो कोई जीवन दर्शन था या फिर कटीली राहों का प्रदर्शन। दो घंटे अनवरत इस धूल में सर खपाने के बाद भी कविता और रस का विवाद जब हमें समझ नहीं आया तो बस आँखें नम थीं और दिल सोच रहा था कि कुछ तो लिखें। देश की समस्या से सभी को रूबरू कराएँ। खैर रात्रि में हमने लिखने की फिर से नाकाम कोशिश की। कुछ कोशिश हमारी थी और कुछ कक्षा के उभरते साहित्यकारों की मेहरबानी थी। अधूरा गृह कार्य हमें चिढ़ा रहा था और भविष्य में हमें कक्षा से बाहर खड़ा दिखा रहा था। फिर भी नए पृष्ठ पर हमने नई अर्थव्यवस्था को सबसे कमजोर और बेबस बताया। नेताओं को स्वार्थी और बुद्धू बनाने की कला में पारंगत दिखाया पर अंत में स्वयं को सिर्फ कागज और कलम से लड़ते हुए पाया।

दूसरे दिन संपादक जी के विचारों की लाठी पकड़ हमने पेड़-पौधों का महत्व बताया और उन्हें अपनी जिंदगी का असली साथी बतलाया। बात कुछ बनी नहीं और पेड़-पौंधों को त्याग कर हमने माता-पिता और गुरुजनों के गुणों को लिख डाला। भावुक हो कर उन पर और गुरुजनों पर कुछ ऐसा लिख गए जिस पर हम खुद ही डर गए और उस लेख को हमने कूड़े के हवाले किया और क्षितिज को अपना निशाना बनाकर लिखा कि क्षितिज धोखा है, मायाजाल है। क्षितिज पर अपना गुस्सा निकाल ही रही थी कि तभी हृदय ने मन के रोशनदान को खोलते हुए कहा कि क्षितिज धोखा नहीं मंजिल है, अँधेरा नहीं प्रकाश है, क्षितिज हमें लेख लिखने के लिए अपनी ओर आकर्षित करता है। उसमें लेख प्रकाशित करना कर्तव्य है और अधिकार भी। बस यह सोचते ही दे दी हमने अपनी कल्पना को नई उड़ान और लिख दिया एक अनमोल लेख। हमारी कलम अब रुकने का नाम नहीं ले रही थी किन्तु क्षितिज की शब्द सीमा को ध्यान में रखते हुए हमने अपना लेख समाप्त किया और राहत की साँस ली। एक क्षण के लिए लगा कि कहीं संपादिका महोदया इसे अस्वीकार न कर दें, परन्तु हमारा तो मनोबल तो पहले से ही दुगना हो चला था। इस अंक में न सही अगला अंक भी तो अपना ही था।

अर्शिया अनेजा
कक्षा -दस

क्षितिज परिवार संस्थापना दिवस के हमारे मुख्य अतिथिगण का हार्दिक स्वागत करता है !

श्रीमती श्लोका नाथ

श्रीमती श्लोका नाथ भारतीय जलवायु संस्थान की कार्यकारी निदेशक हैं। वे भारत के परिपेक्ष्य में जजलवायु क्षेत्र के कारकों के योगदान के विषय में बात करती हैं।

श्री सत्यम शंकर सहाय

श्री सत्यम शंकर सहाय वर्ल्ड ट्रायथलॉन कॉरपोरेशन द्वारा स्विट्जरलैंड में आयोजित प्रतियोगिता को सफलतापूर्वक पूरा कर नौवीं बार आयरनमैन बने हैं।

इंद्रधनुष के रंगों का जादू

एक बार की बात है, गर्मियों की हल्की बारिश के बाद, आसमान ने एक मनमोहक दृश्य दिखाया- एक इंद्रधनुष, जो पूरे आसमान में अपनी छटा बिखेर रहा था। इसके रंग जीवंत थे, मानो आसमान ने स्वयं ही सभी को देखने के लिए एक बेहतरीन कृति बनाने का फैसला किया हो। लेकिन यह इंद्रधनुष आखिर है क्या और इसे देख कर मन इतना प्रसन्न क्यों हो जाता है? तो चलिए इंद्रधनुष के अर्थ और महत्व को उजागर करने के लिए एक यात्रा पर चलें।

इंद्रधनुष सूर्य की रोशनी और बारिश की बूँदों जैसी साधारण और चीज़ों से निर्मित होता है। जब सूरज की रोशनी बारिश की बूँदों से होकर गुज़रती है, तो वह मुड़ जाती है, या अपवर्तित हो जाती है, और फिर बारिश की बूँदों की अंदरूनी सतह से परावर्तित हो जाती है और जैसे ही प्रकाश जल की बूँदों से बाहर निकलता है, वह फिर से मुड़ जाता है, और यह प्रक्रिया प्रकाश को लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, नीला और बैंगनी रंगों में विभाजित कर देती है—लाल, नारंगी, पीला, हरा, नीला, आसमानी और बैंगनी। ये रंग फैलकर प्रकाश का एक चक्र बनाते हैं, लेकिन चूँकि हम पर इंद्रधनुष को धरती से देखते हैं, इसलिए वे अर्धवृत्ताकार चाप के रूप में दिखाई देते हैं। इंद्रधनुष के ये सभी रंग हमेशा एक ही क्रम में व्यवस्थित होते हैं, बाहर की तरफ लाल और अंदर की तरफ बैंगनी। रंगों का यह स्पेक्ट्रम विविधता और सुंदरता से परिपूर्ण होता है।

इंद्रधनुष सदियों से सुंदरता और रहस्य के लिए प्रशंसनीय रहा है। अनेक संस्कृतियों में, इंद्रधनुष को स्वर्ग और पृथ्वी के बीच एक पुल के रूप में देखा जाता है, जो आशा का प्रतीक है। कई लोगों के लिए, तूफ़ान के बाद इंद्रधनुष देखना एक अनुस्मारक है कि चाहे कितना भी अंधकारमय और कठिन समय क्यों न हो, दूसरी तरफ हमेशा रोशनी और सुंदरता इंतज़ार कर रही होती है। यह आशा की स्थायी शक्ति का संदेश है। वैज्ञानिक व्याख्या से परे, इंद्रधनुष हमेशा से जादू और आश्चर्य की भावना से घिरा रहा है। विभिन्न संस्कृतियों में, इंद्रधनुष को देवताओं के शगुन या संकेत के रूप में देखा जाता है। कुछ लोगों का मानना है कि इंद्रधनुष दूसरी दुनिया का प्रवेश द्वार है, एक ऐसा रास्ता जो अज्ञात क्षेत्रों की ओर ले जाता है, जहाँ असंभव संभव हो जाता है।

इंद्रधनुष के प्रत्येक रंग एक सामंजस्यपूर्ण संपूर्णता बनाते हैं, जो जीवन के संतुलन और परस्पर जुड़ाव को दर्शाता है। हिंदू पौराणिक कथाओं में, इंद्रधनुष को इंद्र के धनुष के रूप में देखा जाता है, जो वर्षा के देवता हैं। इंद्रधनुष प्रकृति की शक्ति और सुंदरता का प्रतीक दोनों ही है।

इंद्रधनुष हमें आकर्षित करता हैं क्योंकि वह हमें याद दिलाता हैं कि सबसे गहरे तूफानों के बाद भी, प्रकाश और रंग पाया जा सकता है। इंद्रधनुष हमें रुकने, चिंतन करने और प्राकृतिक दुनिया की सरल लेकिन असाधारण घटनाओं में आनंद खोजने के लिए आमंत्रित करता हैं। वह हमें क्षितिज के पार छिपे जादू पर विश्वास करने और हर नए दिन के साथ आने वाली आशा को अपनाने के लिए प्रोत्साहित करता हैं।

अतः अगली बार जब आप आसमान में इंद्रधनुष को फैला हुआ देखें, तो उसकी खूबसूरती का आनंद उठाने के लिए कुछ पल निकालें क्योंकि रंगों के उस अर्ध चाप में एक शक्तिशाली संदेश छिपा है:

"चाहे तूफान कितना भी गहरा क्यों न हो, रोशनी और सुंदरता हमेशा चमकने का रास्ता खोज ही लेती है"।

शिवांगी भूपेन्द्र
कक्षा -बारह

क्या त्वचा के रंग के आधार पर मूल्यांकन करना उचित है ?

सौन्दर्य हम सभी को आकर्षित करता है लेकिन सौन्दर्य क्या है? क्या वह रंग-रूप के और आकार के किन्हीं जड़ पैमानों में होता है? दुर्भाग्य से ऐसी जड़ता हमारे समाज में बहुत व्याप्त है।

बचपन से लेकर अब तक हमने कभी न कभी सौन्दर्य प्रसाधनों के विज्ञापन देखे हैं। उन विज्ञापनों से दुनिया इतनी प्रभावित हुई कि सभी ने उस उत्पाद का उपयोग करना शुरू कर दिया। कारण था उन विज्ञापनों में गोरे रंग का दावा करना। सड़क किनारे लगे होर्डिंग्स से लेकर टेलीविजन विज्ञापन तक में गोरी त्वचा को ही प्राथमिकता दी जाती है। वर्तमान समय में कई सौंदर्य उत्पाद कंपनियाँ विज्ञापनों के माध्यम से सुंदरता के अलग-अलग मानक स्थापित कर रही हैं और तो और सुंदरता की इस होड़ में आज पुरुष भी शामिल हो गये हैं। वर्तमान समय में पुरुषों के लिए सौंदर्यवर्धक प्रसाधनों के कई विकल्प मौजूद हैं। ये सौन्दर्य प्रसाधन खूबसूरती के नाम पर लोगों को गुमराह कर रहे हैं। हाल ही में, तेलुगू अभिनेत्री साई पल्लवी ने फेयरनेस क्रीम का विज्ञापन करने से मना कर दिया। इसके पीछे उनका तर्क बहुत ही उचित है। वे कहती हैं "सुंदरता केवल चेहरे में ही नहीं होती, बल्कि यह इस बात की स्वीकृति में भी निहित होती है कि एक व्यक्ति मानवता और जीवन को किस प्रकार देखता है, तथा यह मानव के हृदय में, उसकी बुद्धि, ज्ञान, करुणा और सहानुभूति में भी निहित होती है।"

प्रश्न यह है कि इस मानसिकता में बदलाव कैसे हो? वैसे तो जागरूकता अभियानों के द्वारा इसमें सहायता मिल सकती है, लेकिन इसका असर सीमित होता है। इसके लिए हमें अपनी सोच में बदलाव करना होगा। सफेद या काले रंग को सफलता से जोड़कर देखना भी गलत है। आकर्षक व्यक्तित्व के प्रति हमें अपनी धारणा भी बदलनी होगी। गोरा रंग सुंदरता का अकेला मापदंड नहीं हो सकता। हमें यह याद रखना चाहिए कि रिहाना और विल स्मिथ जैसे सितारे पश्चिमी देशों में भी आकर्षक व्यक्तित्व वालों में गिने जाते हैं। हमें इसको स्वीकार करना होगा और अपने पूर्वाग्रहों को दूर करना होगा।

आर्या शर्मा
कक्षा - नौ

छोटी कहानियों के बड़े सबक

कहानियाँ हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा है। कहानियाँ सभी विषयों को रोचक तरीके से सामने रखती हैं और साथ ही साथ कुछ सीख देने का भी काम करती हैं। प्रस्तुत हैं ऐसी ही कुछ कहानियाँ जो छोटी सी हो कर भी बड़ी सीख दे जाती हैं-

सोच

एक अंधा व्यक्ति रात को लालटेन लेकर चल रहा था। किसी ने उससे पूछा, "तुम्हें तो दिखाई नहीं देता, फिर यह लालटेन क्यों लेकर चल रहे हो?" अंधे ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "यह लालटेन मेरे लिए नहीं है, बल्कि उन लोगों के लिए है जो देख सकते हैं जिससे वे मुझसे टकराए नहीं।"

सीख: हमारी सोच सिर्फ अपने लिए नहीं, बल्कि दूसरों की भलाई के लिए भी होनी चाहिए।

प्रयास

एक मजदूर बड़े पत्थर को तोड़ने का कार्य कर रहा था। वह लगातार हथौड़े से वार करता, लेकिन पत्थर पर कोई असर नहीं हो रहा था। वह थकने लगा लेकिन उसने हार नहीं मानी। लगभग सौवीं चोट पर पत्थर टूट गया। मजदूर को अनुभव हुआ कि पत्थर सिर्फ उस अंतिम चोट से नहीं, बल्कि पहले के हर वार से कमजोर हुआ था।

सीख: कभी-कभी हमारी मेहनत का परिणाम शीघ्र नहीं दिखता, लेकिन लगातार प्रयास हमें अंततः सफलता की ओर ले जाता है।

धैर्य

एक व्यक्ति अपने जीवन में लगातार असफल हो रहा था और बहुत निराश था। वह एक संत के पास गया और अपनी समस्या बताई। संत उसे जंगल में ले गए और बोले, "देखो, मैंने बाँस और फर्न के बीज एक ही दिन लगाए थे। फर्न जल्दी उग गया और पूरे जंगल को हरा-भरा कर दिया लेकिन बाँस के बीज ने कई सालों तक जमीन के ऊपर कुछ नहीं दिखाया।"

संत ने आगे कहा, "फिर पाँचवें साल में बाँस अचानक तेजी से बढ़ा और कुछ ही महीनों में आसमान छूने लगा। ये पाँच साल उसने जड़ें मजबूत करने में लगाए।"

सीख: धैर्य और मेहनत का फल देर से ही सही, पर मिलता जरूर है। कठिन समय में धैर्य बनाए रखना जरूरी है।

पावनी महिंद्रा
कक्षा -दस

चाँद की प्रेरणादायक ज्योति

चाँद सदियों से कवियों, लेखकों और दार्शनिकों को प्रेरित करता रहा है। इसकी चाँदी जैसी चमक और रहस्यमयी खूबसूरती हमें जीवन के विभिन्न पहलुओं पर विचार करने का मौका देती है। आइए हिंदी कथनों के माध्यम से चाँद से प्रेरणा ग्रहण करें और उनको अपने जीवन में उतारें-

- **चाँद हर रात घटता है और फिर बढ़ता है, वैसे ही जीवन में भी उतार-चढ़ाव आते रहते हैं।**
  जीवन में सुख-दुख का आना जाना लगा रहता है, और अनवरत यह सिलसिला चलता रहता है।
- **चाँद की रोशनी दूर से ही जगमगाती है।**
  सपनों को प्राप्त करने के लिए दूर तक जाना पड़ सकता है अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कड़ी मेहनत और धैर्य की आवश्यकता होती है।
- **चाँद की रोशनी सब के ऊपर समान रूप से पड़ती है।**
  सबके साथ समान व्यवहार करना चाहिये और भेदभाव नहीं करना चाहिये।
- **चाँद का एक ही पहलू दिखता है, लेकिन वह पूरे आकार का होता है।**
  प्रत्येक व्यक्ति में अनेक गुण होते हैं अतः लोगों को उनके गुणों से आँकना चाहिये।
- **चाँद की खूबसूरती दूर से ही मनमोह लेती है।**
  आपके अंदर भी खूबसूरती है, उसे बाहर निकालकर सभी को दिखाएँ।
- **चाँद पृथ्वी का सहचर है।**
  आप भी किसी का सहारा बनें और दूसरों की सहायता करें।
- **चाँद ग्रहण के बाद और भी ज्यादा चमकता है।**
  आप भी मुश्किलों को पार कर और मजबूत बनें। मुश्किलें हमें मजबूत बनाती हैं, इनसे घबराएँ नहीं।
- **चाँद की रोशनी मे कवि अपनी सुंदर कल्पना करते हैं ।**
  सपने देखने की हिम्मत रखें। सपने देखने से न डरें और उन्हें पूरा करने का प्रयास करें।

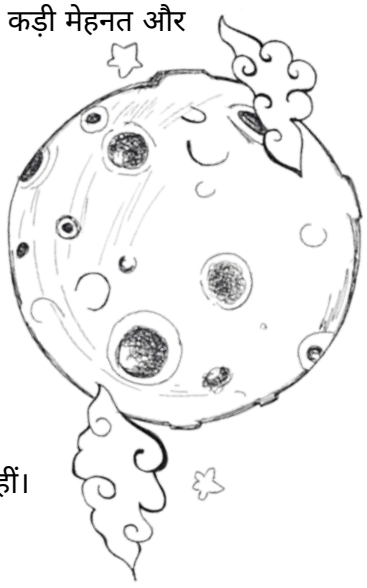

आशिया महाजन
कक्षा -ग्यारह

रंग बिरंगे शहर

भिन्न-भिन्न शहरों में जाना अपने आप में एक मंत्रमुग्ध करने वाला अनुभव है क्योंकि यहाँ आपको वहाँ की संस्कृतियों के बारे में जानने और अलग-अलग तरह के लोगों से मिलने-जुलने का मौका मिलता है, लेकिन कुछ स्थानों में जीवंत रंग होते हैं जो जीवन में आई नीरसता को दूर भगाते हैं। रंग बिरंगे ये शहर दर्शाते हैं कि रंग कैसे किसी स्थान को बदल देते हैं। चाहे आप सांस्कृतिक अनुभवों की तलाश में एक यात्री हों या एक दर्शक जो उत्सुकता से किसी सुंदर नाटक का इंतज़ार कर रहा हो, ये शहर आपकी यादों में बसने की क्षमता रखते हैं। इन्हीं में से कुछ रंगीन शहर प्रस्तुत हैं-

गुलाबी शहर- जयपुर

राजस्थान की राजधानी जयपुर अत्यधिक मनोरम एवं आकर्षक पर्यटन स्थल है। इस नगरी से जुड़े कुछ प्राचीन तथ्य एवं रहस्य है जिसके कारण यह शहर दुनियाभर में गुलाबी नगर के रूप में विख्यात हो गया। ऐसा कहा जाता है कि सन् 1876 में महारानी विक्टोरिया और वेल्स के राजकुमार ने भारत भ्रमण के दौरान यहाँ की प्रसिद्ध नगरी जयपुर का दौरा करने का निर्णय किया था। उस समय जयपुर के महाराजा राम सिंह ने मेहमानों के स्वागत के लिए सम्पूर्ण जयपुर नगरी को गुलाबी रंग से रंगवाया था। उसी समय से प्राचीन संस्कृति और आतिथ्य धर्म का पालन करने के लिए इस नगरी में प्रत्येक ईमारत को गुलाबी रंग से निर्मित करने की परम्परा का प्रचलन शुरू हो गया।

नीला शहर -जोधपुर

राजस्थान की एक और खूबसूरती नगरी है- जोधपुर। जिसे हम ब्लू सिटी के नाम से भी जानते हैं। जोधपुर पहुँचते ही नीले आसमान जैसा सौन्दर्य धरती पर नज़र आता है। शहर की सबसे ऊँची चोटी मेहरानगढ़ के किले से तो इस नीले शहर की सुन्दरता अद्भुत दिखती है । ऐसा माना जाता है कि शहर के घरों को नीले रंग से रंगने का काम वहाँ के लोगों ने इसलिए किया था जिससे वे शहर को एक अलग रूप दे सकें। समय के साथ-साथ शहर के लोगों ने इसे अपना लिया और वहाँ आम तौर पर सभी घर आपको नीले रंग के ही मिलेंगे। एक मान्यता यह भी है की नीला रंग कीड़ों को दूर भगाता है। इस तरह हम जोधपुर को ''द ब्लू सिटी'' के नाम से भी जानते हैं।

द एवरग्रीन सिटी -तिरुवनंतपुरम

वैसे तो केरल का हर शहर ही हरियाली से भरा है किन्तु तिरुवनंतपुरम को राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने एवरग्रीन सिटी का नाम दिया था। अरेबियन महासागर और पश्चिमी घाटी के पास बसा यह शहर हरियाली से भरपूर है। इसलिए अगर आपको भारत की प्राकृतिक सुन्दरता के दर्शन करने हैं तो तिरुवनंतपुरम अवश्य जायें।

ये सभी शहर भारत की सांस्कृतिक परम्परा के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। गुलाबी रंग के प्रतीक जयपुर के आतिथ्य सत्कार से लेकर और जोधपुर के ठंडे नीले तक प्रत्येक शहर भारत की समृद्ध विरासत की एक अनूठी झलक प्रस्तुत करता है। इन शहरों की खोज करने से न केवल नेत्रों को आनंद मिलता है बल्कि उनके ऐतिहासिक आख्यानों की समझ भी मिलती है जो आज भी उनकी पहचान को आकार दे रहे हैं।

हिति गोयल एवं पीहू टिबरेवाल
कक्षा -दस

मुझसे बढ़कर कौन

एक दिन ग्रीष्म अवकाश के दौरान बास्केटबॉल कोर्ट और ऑडिटोरियम अपने विद्यालय के सन्नाटे से ऊब गए और उनके बीच एक वार्तालाप शुरू हुआ।

ऑडिटोरियम- क्या तुम मेरा महत्व जानते हो? वैसे तो विद्यालय का हर सदस्य दिन भर की भाग-दौड़ में व्यस्त रहता है परंतु सबके दिन का आरंभ प्रार्थना सभा से ही होता है जो मुझ में ही की जाती है। बास्केटबॉल कोर्ट ने गुस्से में कहा- यह मत भूलो कि उससे पहले बच्चों की यह फौज मुझ पर ही आकर खड़ी होती है। केवल कप्तानी ही नहीं मैं भी इनकी हर बात मानता हूँ।कोर्ट को नीचा दिखाने के लिए ऑडिटोरियम ने कहा- मेरे मंच पर खड़े होकर ही तो श्रीमती कपूर रोज प्रार्थना करती है और मेरे कारण ही तो विद्यालय की सभी प्रतियोगिताएँ होती हैं। बास्केटबॉल कोर्ट ने याद दिलाते हुए कहा- मार्च में दसवीं और बारहवीं कक्षा की छात्रों की पढ़ाई में मैं ध्यान लगाने में सहायता करता हूँ। मेरे कारण ही तो वे उत्तम अंक लाती हैं।

ऑडिटोरियम ने अपनी छाती फुला कर कहा कि गोल्डन जुबली जैसी प्रतियोगिताओं के दौरान वैल्हमाइट शोर मचा कर मेरी नाक में दम कर देती हैं। कम से कम में परीक्षाओं के वक्त तो चुप रहती है। बास्केटबॉल कोर्ट ने नाक फूलाते हुए कहा- अरे! शाम को मेरे पास ही तो खेलकर अपना मनोरंजन करती हैं। ऑडिटोरियम ने मुस्कुराते हुए कहा- मेरे साथ टीचर्स डे जैसे कार्यक्रमों और बारहवी कक्षा की छात्राओं के विदाई गीत की यादें जुड़ी हुई है। बास्केटबॉल कोर्ट ने मुस्कुराते हुए कहा - रात्रि के भोजन के बाद मेरे साथ बैठी बहनों के दिल की बातें, दोस्तों की रोमांचक कहानियाँ और जीवन के अनेक रहस्यों को जानने का मजा कुछ और ही होता है। इसके बाद दोनों शांत हो गए और एक दूसरे के अस्तित्व को समझ कर मन ही मन मुस्कुराने लगे।

आद्या
कक्षा-नौ

"रंग और ब्रांड्स "

क्या आपने कभी सोचा है कि कुछ ब्रांड आपको खुश या उत्साहित क्यों महसूस कराते हैं? जब आप चमकीले रंगों वाले स्टोर में जाते हैं तो आप ज़्यादा खुश क्यों महसूस करते हैं? इसका उत्तर रंगों के मनोविज्ञान में निहित है—कुछ प्रसिद्ध ब्रांड रंगों का उपयोग अपने ग्राहकों से जुड़ने के लिए करते हैं। लाल रंग भावनात्मक रूप से सबसे ज़्यादा प्रभावित करने वाला रंग है। कोका-कोला, नेटफ्लिक्स जैसी ब्रांड का लाल रंग खुशी, ताजगी,सकारात्मकता और ऊर्जा से जुड़ा हुआ है साथ ही यह हृदय में उत्साह की भावना प्रदान करता है। आईबीएम ब्रांड से जुड़ा नीला रंग विश्वास, सुरक्षा और निर्भरता की भावना पैदा करता है। यह रंग उपभोक्ताओं मे भरोसा और विश्वास जैसे गुणों को भी प्रकट करता है। इसी कारण अनेक कंपनियाँ अपने लोगो और ब्रांड्स में नीले रंग का उपयोग करती है। फेसबुक भी नीले रंग का प्रयोग करता है जिससे लोग, सोशल मीडिया प्लेटफार्म का उपयोग करते समय सुरक्षित महसूस कर सकें।

हरा रंग अक्सर प्रकृति, विकास और सद्भाव से जुड़ा होता है और यह संदेश देता है कि कंपनी पर्यावरण के अनुकूल है। स्टारबक्स जैसी प्रसिद्ध कंपनी हरे रंग का प्रयोग यह दिखाने के लिए करती है कि वह पर्यावरण-मित्रता का प्रतिनिधित्व करती है। हरे रंग को विकास, संतुलन, स्थिरता, शांति और स्वास्थ्य का प्रतीक भी माना जाता है वहीं गुलाबी रंग अधिकतर महिलाओं को लक्षित करने वाले ब्रांडों के लोगो में इसका इस्तेमाल किया जाता है। यह मिठास से भी जुड़ा हुआ है और इसे आइसक्रीम और डोनट्स जैसे मीठे खाद्य पदार्थों के लोगो में देखा जाता है।

काला रंग गोपनीयता और विशिष्टता का प्रतिनिधित्व करता है। यह अक्सर उपभोक्ताओं में ज्ञान और सुरक्षा की भावना पैदा करता है। नाइकी और एडिडास जैसी कंपनियाँ काले रंग का प्रयोग करती हैं। सफ़ेद रंग आधुनिकता को प्रदर्शित करता है। उपभोक्ताओं के बीच, यह अक्सर ईमानदारी और शांति की भावनाएँ उत्पन्न करता है।एप्पल एवं वर्डप्रेस जैसी ब्रांड अपने लोगो में सफेद रंग का प्रयोग करती हैं।

अब जब आप किसी ब्रांड को देखें तो यह जरूर विचार करें कि वह अपने रंगों के माध्यम से क्या संदेश देना चाहता है।

गौरी रावत
कक्षा- बारह

बूझो तो जाने :वैल्हम को पहचाने

1. गर्मियों का आनंद लेते जहाँ, सारी टेंशन जैसे मिट जाती यहाँ, बताओ जल्दी वह जगह है कहाँ, क्योंकि तुम्हारा मन भी करता जाने का वहाँ |

2. वैल्हम का गुप्त रास्ता है, जो चुपचाप इस पार से उस पार ले जाता है, नाम बता सकते हो तुम उसका, क्योंकि यह स्वादिष्ट खाने ही याद दिलाता है |

3. मन की बातें लिखने की एक जगह है हमारे पास, वैल्हम में सिंहासन है ऐसा एक खास, शाहजहाँ के दरबार से लाया गया हमारे पास, तुम सबको आता है वो इतना रास, वहाँ बतियाते रहते हो तुम सब बैठकर आस–पास।

1. समर हाउस 2. सबवे 3. पब्लिक थ्रोन

हर चित्र कुछ कहता है ......

- **विभा मैम अपने प्राइवेट जेट से मार्च पास्ट का निरीक्षण करने आ गई हैं ।**
- **रक्षा बंधन की आधी छुट्टी मिल गई ।**
- **पूरे दिन लैपटॉप ले कर रहेंगे ।**
- **अरे वाह! सुबह-सुबह 5.30 पर बारिश हो गई ।**
- **जूनीयर्स ने भी की सोश्लस के लिए हड़ताल।**
- **हूप्पू और फ्लाइकेचर की तरह हमें भी फिल्म देखने जाना है ।**
- **ठंड में भी आइस -क्रीम खा कर रहेंगे।**

शैक्षिक समाजवाद के क्षेत्र में वैल्हम गर्ल्स स्कूल की एक अनूठी क्रांतिकारी पहल

ज्ञान को समाज में व्यापक रूप से प्रसारित करने हेतु हमारा विद्यालय सदैव ही प्रतिबद्ध रहा है। हमारे विद्यालय ने सदैव शिक्षा के माध्यम से समाज को जोड़ने में विशेष भूमिका निभाई है। ज्ञान-संवृद्धि की इस अनूठी पहल के अन्तर्गत 'बोर्डिंग स्कूल एसोसिएशन ऑफ इण्डिया' एवं 'वैल्हम गर्ल्स स्कूल' देहरादून के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर एवं हिन्दी भाषा के उन्नयन हेतु एक हिन्दी कर्मशाला का आयोजन 18 सितंबर, 2024 को वैल्हम गर्ल्स स्कूल में किया गया। कार्यशाला के मार्गदर्शक प्रसिद्ध व्याकरणाचार्य, भाषाविज्ञानी एवं मीडियाध्ययन-विशेषज्ञ आचार्य पण्डित पृथ्वीनाथ पाण्डेय ने सम्यक रूप से समस्त हिन्दी अध्यापक-अध्यापिकावृन्द का शैक्षणिक मार्गदर्शन किया। कार्यशाला का मुख्य विषय "सर्जनात्मक पठन-पाठन-वाचन एवं लेखनकला में हिन्दी का महत्त्व" रहा। कार्यशाला में 'बोर्डिंग स्कूल एसोसिशन ऑफ इण्डिया' के तथा शासकीय सस्थानों के 44 प्रबुद्ध हिन्दी शिक्षकों ने सहभागिता की। इस राष्ट्रीय शैक्षणिक आयोजन में अनेक राज्यो से प्रतिनिधि सम्मिलित हुए।

गौरव के क्षण

हिंदी विभाग की विभागाध्यक्ष डॉ. नालंदा पांडे ने ऑल इंडिया रेडियो आकाशवाणी पर "हिंदी-सूचना प्रौद्योगिकी" शीर्षक पर एक व्याख्यान दिया। यह कार्यक्रम सूचना क्रांति द्वारा भाषा में लाए गए महत्वपूर्ण परिवर्तनों पर केंद्रित था।

वारिधि अग्रवाल एवं गौरी रावत ने आरंगेत्रम द्वारा सभी दर्शकों का मन मोह लिया। अरंगेत्रम" एक तमिल शब्द है जिसका अर्थ है "मंच पर चढ़ना" या "पहला प्रदर्शन।" इसे भरतनाट्यम नर्तक की यात्रा में एक मील का पत्थर माना जाता है, जो कला के रूप में उनकी औपचारिक दीक्षा को चिह्नित करता है।

दक्षिण एशिया के प्रमुख पाँच विद्यालयों में वैल्हम गर्ल्स स्कूल ने भी अपना एक विशिष्ट स्थान बनाया ।

साक्षात्कार

हिन्दी भाषा के अनन्य साधक: आचार्य पृथ्वी नाथ पांडे

पिछले दिनों बोर्डिंग स्कूल एसोशिएशन एवं हमारे विद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में हिन्दी भाषा की कार्यशाला आयोजित हुई जिसमें राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित हिन्दी भाषा के मूर्धन्य साहित्यकार आचार्य पृथ्वीनाथ पांडे जी से क्षितिज की छात्राओं ने सम्पादन के गुर सीखे तथा उनसे बातचीत की। प्रस्तुत है उनसे बातचीत के कुछ अंश -

दीपिका : आचार्यजी, हमें अपनी अध्यापिका से पता चला है कि आपका हिंदी जगत में बहुत बड़ा नाम है। आपका हिंदी भाषा के प्रति प्रेम कैसे जागृत हुआ?

आचार्यजी : जब मैं हिंदी भाषा को पढ़ रहा था और समझ रहा था तब मैंने भाषा में अनेक अशुद्धियाँ देखीं फिर मैंने प्रण किया कि मैं भाषा के क्षेत्र में जो भी अशुद्धियाँ आ रही हैं उन्हें समाज के सम्मुख प्रस्तुत करते हुए उसके शुद्ध रूप के प्रति समाज को सजग करूँगा। हमारी मातृभाषा हिंदी हैं और यदि हम उसी के प्रति अनुराग व्यक्त नहीं करेंगे तब हमारा होना न होना कोई माइने नहीं रखता।

अक्षिता : आचार्यजी, आज-कल जैसे घर-घर में छोटे बच्चे अंग्रेजी कहानियाँ पढ़ने में ही रूचि रखते हैं। तो मेरा प्रश्न यह है कि हिंदी बाल साहित्य में ऐसा क्या लिखा जाए कि अंग्रेजी विद्यालय के बच्चें भी हिंदी की कहानियाँ पढ़ना चाहें ?

आचार्यजी : सबसे पहले बाल साहित्य लेखन करने वाले को यह समझना पड़ेगा कि वह जिस साहित्य की रचना कर रहे हैं। उसका उद्देश्य क्या है और किसके लिए है। कहानियों में सरल शब्द और छोटे- छोटे वाक्य होने चाहिए। बच्चों के मनोविज्ञान की समझ उनके भीतर होनी चाहिए। बाल्यावस्था का समय लम्बा होता है इसलिए हमें यह निर्धारित करना होगा कि हम किस उम्र के बच्चों के लिए लिख रहे हैं। 5 - 7 वर्ष के बच्चों के लिए लेखन कर रहे है तो उन बच्चों की तरह सोचना पड़ेगा। बच्चों के लिए साहित्य लिखने के लिए बच्चों जैसे बनना पड़ेगा।

दीपिका : आज-कल बच्चें हिंदी पढ़ना क्यों नहीं पसंद करते ? क्या आपको लगता है कि हिंदी पढ़ना पाठ्यक्रम का हिस्सा बनाना चाहिए?

आचार्यजी : बात यहाँ भाषा की नहीं रूचि की हैं। लेखकों को इस प्रकार से लिखना चाहिए कि उनका काम एक रोचक ढंग से प्रस्तुत हो। अब यदि बाल साहित्य लिखा जा रहा है, तो बाल साहित्य से संबंधित चित्र भी होने चाहिए, सरल भाषा होनी चाहिए जो बच्चों की रूचि उन कहानियों में बनाए रखे। बाल साहित्य को पढ़ना अनिवार्य कर दिया जाए या पाठ्यक्रम का हिस्सा बनादिया जाए तो सभी के लिए हिंदी पढ़ना आवश्यक हो जाएगा।

दीपिका : आप सभी विद्यार्थियों को क्या संदेश देना चाहेंगे?

आचार्यजी : मैं केवल यही चाहता हूँ कि सभी बच्चे हिन्दी भाषा के प्रति अपना प्रेम और अनुराग बनाए रखें।

उभरती कवयित्रीयाँ

रंग

हर रंग में छिपी एक नई कहानी,
जो संसार में उजाला लाती,
और हमारे मन में भी बस जाती।

लाल रंग में है प्रेम की गहराई,
नीला रंग है आसमान का प्रतीक,
न रुको और बढ़ाओ अपनी गति।

पीली रौशनी है सूरज की,
हरी है समस्त हरियाली,
जो विश्व को बनाती सबसे न्यारी।

सफ़ेद संसार में सबसे शाँत,
बिल्कुल जैसे माँ का लाड़।

फूलों से लेकर पेड़ों तक,
मंद- मुस्कुराता रंगों का शरबत।
हर एक इंद्रधनुष आसमान में
बहुत सारी खुशियाँ लाता न जाने कहाँ से|

धनश्री भूपाल
कक्षा -सात

रंगों की सारंगी

सूरज की किरणें, रंगों का जाल,
हर सुबह लाए, नए सपनों का हाल।
नीला आकाश, लाल सी लाली,
हरे खेतों में बसंत की थाली।
पीला रंग लाए खुशियों की बौछार,
जैसे धूप छू ले मन के द्वार।
हरा रंग दिखाए उम्मीद की राह,
हर कठिनाई में बने मन का प्रवाह।
सफेद चाँदनी रात, शांत मन का साथ,
काले बादलों में छिपा, जीवन का पाठ।
हर रंग में है कहानी, हर रंग में है भक्ति,
सभी मिलकर बनायें, एक नवीन सृष्टि।
रंग का सारंग, जीवन का है गान,
चलो मिलकर गुनगुनाएँ,
प्रेम का ये विधान।
जब सभी रंग मिल जाते हैं संग,
जीवन बन जाता मधुरिम राग।

आरना अग्रवाल
कक्षा -सात

जीवन को भरो रंगों से

रंगों से हैं सजी ये दुनिया,हर रंग का है अपना नाता,
जीवन को भरो रंगों से,हर दिन यह सुंदर बनाता ।।
लाल रंग हिम्मत सिखाए,जोश से भरे दिल को,
हर चुनौती का सामना करना,ये कहता है सबको।।
नीला रंग शांति दर्शाता,आसमान की तरह विशाल,
गहराई में सुकून छिपाए,बने सपनों की मशाल ।।
हरा रंग है उम्मीदों का,नए सवेरे का संदेश,
प्रकृति की हरियाली जैसी,जीवन में लाए नई फुहार ।।
पीला रंग मुस्कान बिखेरे,खुशियों का हो साज,
सूरज जैसा चमकना सिखाए,हर मुश्किल आसान बनाए ।।
काला रंग अँधेरा सही, पर देता एक नई पहचान,
रात बिन सवेरा नहीं, यही है इसका अरमान ।।
सफ़ेद रंग शुद्धता की पहचान, सच्चाई का हैं रूप,
सादगी में भी है सुन्दरता, जीवन का यह हैं यह स्वरुप।।
रंग – रंग से सजी है दुनिया, हर रंग में है छुपा ज्ञान,
रंगों से सीखो पाठ जीवन का, हर पल बनो महान ।।

आद्या

जीवन के रंग

जीवन में आज फीका रंग है तो क्या ?
कल उससे अच्छा होगा।
आज काले बादलों की चादर है तो क्या ?
कल शायद पूरा आसमान रोशन होगा।

जैसे रोज़ सूरज अंधकार से उठता है।
हर कमल कीचड़ से निकलता है।
समय-समय पर चाँद भी छिप जाता है
लेकिन हिम्मत कर, बाहर निकलकर
ज़रूर आता है।

लोहा भी बरतन बनने से पहले तपता है,
सोना भी जितना जले, उतना निखरता है।
तुम बस कर्म करो परिश्रम का फल मिलेगा।
जीवन में कई रंग आएँगे,
हिम्मत रखो,
हर परेशानी का हल मिलेगा।

श्रीना गुलाटी
एस सी

वैल्हम की पहेली

(सभी पहेलियों का केंद्र वैल्हम की अध्यापिकाएँ हैं -)

1. महासागरों, पहाड़ों, नदियों और देश-विदेश में बिना पासपोर्ट और वीजा हमें घुमाती हैं,
असेंबली में परदे के पीछे रह, हम सबका आत्मविश्वास बढ़ातीं हैं|

2. पैसा-पैसा करती हैं और हमें हर समय 'डिमांड-सप्लाई' समझाती हैं,
विद्यालय में नई-नई आई हैं, बताओ उनका क्या नाम है?

3. जिनकी 'साड़ियों और स्टाइल' की दीवानी वैल्हम की हर काया है,
कभी ए.एफ.एस तो कभी वाद-विवाद में छात्राओं का मार्ग-दर्शन करती, यही उनकी माया है|

4. …………… मैम जल की रानी हैं, जीवन इनका पानी है,
बात न उनकी मानोगे तो पछताओगे।

5. दुबली-पतली काया है, पर अकबर, राणा साँगा पर भारी पड़ती हैं,
पुरानी कहानियों को, हमें बड़ी रुचि लेकर पढ़ातीं हैं|

1. श्रीमती वत्सला दुबे 2. श्रीमती लिपि रमोला 3. डॉ. नालंदा पांडे 4. श्रीमती शिवानी मेहता 5. डॉ. तनुश्री वर्मा

वैल्हम की सामाजिक पहल

परोपकार की भावना, मानवता का मूल।
जिस उपवन में यह बसे, खिलें प्रेम के फूल।।

इस दोहे से प्रेरित होकर हमारे विद्यालय की छात्राओं ने कुछ ऐसी संस्थाएं गठित की हैं जिनका उद्देश्य लोक कल्याण की भावना है तो आइए जानते हैं कि वे कौन हैं और किस प्रकार अपना कार्य सम्पन्न कर रही हैं -

नूरमा
ग्रामीण परिवेश की महिलाओं का समूह वैल्हम की छात्राओं को सिलाई, डिजाइनिंग, कढ़ाई आदि सिखा कर उपयोग में न आने वाली विद्यालय की वर्दी से विभिन्न वस्तुओं जैसे डायरी कवर, गलीचे, मेजपोश आदि में बदल देती हैं । यह एक बेहद समृद्ध अनुभव है ।

खुशी
एक अनूठी पहल जिसमें पुराने खिलौनों को अनेक जरूरतमंदों के घरों में पहुंचाया जाता हैं और नन्हीं मुस्कान का भी आनंद लिया जाता है।

गूँज
एक अभियान जो उपयोग में न आने वाले वस्त्र एकत्रित करते हुए देहरादून के एक गैर सरकारी संगठन आसरा ट्रस्ट में जरूरतमंदों के लिए भेजकर उनका बरसात और ठंड में सहारा बनता ।

सत्यरेखा
देहरादून के शार्प मेमोरियल ब्लाइंड स्कूल में वैल्हम की छात्राएँ क्रिसमस व अन्य त्योहार मनाकर उनकी खुशियों को दुगना कर देती हैं

परदे की पीछे

क्या करें क्या न करें ये कैसी मुश्किल हाय,कोई तो बता दे इसका हल ओ मेरे भाई !

परी हूँ मैं ...

थोड़ा -थोड़ा जागा जागा सा

हम भी हैं उस्ताद !

मुख्य सम्पादिका
दीपिका जोशी

सहायक मण्डल
गौरी रावत
प्रदीपिका गुप्ता
श्रीना गुलाटी
आशिया महाजन
अक्षिता शर्मा
आद्या
अर्शिया अनेजा
नविका जिंदल
आर्या शर्मा
पावनी महिंद्रा
आशी ढंढारिया

तकनीकी सहायक
आध्या बंसल
कशिका जैन

चित्रकार
नव्या तलवार
जिया सिंह
टियारा सिंह
विआ गोयल
सोहा शेख

हास्य प्रभारी
श्रीम मिगलानी

प्रभारी शिक्षिका
डॉ ऋतु पाठक

विशेष आभार
डॉ.नालन्दा पाण्डे
एवं
समस्त हिंदी विभाग

संपादक मंडल